उन्नत बीज़ से उत्तम खेती: डॉ प्रबोध चंद्र शर्मा

कृषि एवं कृषि से संबंधित क्षेत्रों के माध्यम से किसानों के बीच उन्नत तकनीक द्वारा आय दुगनी करने में कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका महत्वपूर्ण है यह कार्य कृषि विविधविधीकरण के माध्यम से बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। इस दिशा में अपने विचार रखते हुए डॉ अतर सिंह, निदेशक, अटारी, कानपुर ने केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, लखनऊ के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, हरदोई द्वितीय द्वारा आयोजित वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 25 सितंबर 2021 में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए अपने सुझावों में मृदा जांच कर स्वास्थ कार्ड उपलब्ध कराने पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने मृदा जांच के आधार पर उर्वरकों के प्रयोग से खेती मे लागत कम करने के साथ-साथ उपज भी अधिक प्राप्त करके किसानो की आय में वृद्धि करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर डॉ प्रबोध चंद्र शर्मा, निदेशक केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल ने के॰वी॰के॰ द्वारा किए जा रहे प्रचार एवं प्रसार के कार्य की सराहना करने के साथ उन्नत किस्म की लवण सहनशील प्रजातियों के बीज किसानों को उपलब्ध कराने एवं हिंदी में अभिनव तकनीकों की जानकारी को प्रकाशित कर किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया। डॉ संध्या पांडे, प्रधान वैज्ञानिक, अटारी, कानपुर ने अपने विचार रखते हुए बताया कि महिलाओं के साथ पुरुष भी न्यूट्री गार्डन में विभिन्न फल एवं सब्जियों को उगाकर पारिवारिक पोषण की आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु अपना सहयोग दें सकते है। इस विषय पर उन्होंने मोटे अनाजों को फसल चक्र में शामिल कर पूर्ण पोषण प्राप्त करने पर जोर दिया जिस के लिए नारी नाम की परियोजना चलायी जा रही है।

डॉ यशपाल सिंह, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं के॰वी॰के॰ प्रभारी ने इस अवसर पर टिकाऊ खेती हेतु उसर मृदा में अधिक उपज हेतु किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़ने की सलाह दी और साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र को प्रशिक्षण एवं कृषि में नवीन शोधों के माध्यम से उजागर होने वाली तकनीकों को किसानों तक

पहुंचाने के लिए एक माध्यम बनने पर जोर दिया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी अधिकारी एवं प्राधान वैज्ञानिक डॉ संजय अरोड़ा ने केंद्र द्वारा हरदोई जिले में पिछले वर्ष में किए गए कार्यों की प्रगति एवं आगामी वर्ष में किए जाने वाले कार्यों की प्रस्तुति की। उन्होने बताया की पिछले वर्ष में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा 45 से अधिक कृषक प्रशिक्षण शिविर , किसान गोष्ठियों एवं कृषक-वैज्ञानिक संवाद के आयोजन के माध्यम से नवीन तकनीकों एवं वैज्ञानिक खेती करने की जानकारी किसानो तक पहुँचने में अहम भूमिका अदा की है। एचसीएल फाउंडेशन के श्री उमाकांत पांडे ने क्षेत्र के किसानों के लिए किए गए कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यों को सराहा और दोनों संस्थाओ को साथ मिलकर कार्य करने की इच्छा जताई।

प्रदेश के अन्य जिलों के कृषि विज्ञान केंद्रों के अध्यक्ष, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष एवं वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु अपने सुझाव प्रस्तुत किए। ऊसर मृदा में भी तकनीकों को अपनाकर किसानों की आय दुगनी हो सकती है यह कृषि विज्ञान केंद्र ने अपने पिछले दो वर्षों में करके दिखाया है। इस अवसर पर हरदोई जिले के कुछ किसानों ने भी अपने विचार रखते हुए बताया की कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग एवं वैज्ञानिको के मार्गदर्शन से ऊसर मृदा में सुधार के साथ -साथ फसल उपज में भी वृद्धि हुई है। लवण सहनशील फसल प्रजातियों एवं जीवाणुओं के तरल फॉर्मूलेशन हॅलो-अजो, पी॰एस॰बी॰, हॅलो-जिंक के प्रयोग से किसानों ने धान , गेहूं, सरसों के साथ-साथ सब्जियों की फसल में भी अधिक मुनाफा कमाया है। साथ ही पराली अथवा फसल अवशेषो को न जलाने के के॰वी॰के॰ के प्रयासो से उसे बैक्टीरिया फोर्मूलेशन 'हॅलो-सीआरडी' के प्रयोग से खेत में ही उपघटित करके किसानो ने अपनी खेत की मृदा के स्वास्थ को सुधारा और पर्यावरण को भी प्रदूषित होने से रोका। इस अवसर पर सभी को परिक्षेत्र पर परदर्शित तकनीकों एवं धन की उन्नत प्रजातियों का भी भ्रमण कराया गया।